

खण्ड-ग

8

उत्तर - 8

(क)

प्रस्तुत पंक्तियाँ "दिन जल्दी-जल्दी ढलता है" कविता की हैं। इन पंक्तियों में श्री हरिवंशराय कच्चन जी ने पाक्षियों के बच्चों की बात की है। उनके अनुसार ये बच्चे अपने संरक्षकों का इंतजार कर रहे हैं, इसीलिए वह नीड़ों से झाँक रहे हैं। 2

(ख)

चिड़िया अपने बच्चों के बारे में विचार करते हुए की वह उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं सोच कर जल्दी धर पहुँचने का प्रयास करती हैं। उनके बच्चे खाने की आशा में उनका इंतजार कर रहे होंगे। वही कवि के अनुसार उसका कोई भी नहीं है जिसके कारण उसके कदम शिथिल हो जाते हैं। 2

(ग)

कवि स्वयं से यह प्रश्न करता है कि उसको मिलने को कौन चिंतित होगा? और वह किससे मिलने को चंचल हो? सही अर्थों में कवि के अनुसार उनका कोई नहीं है। वह समाज में अकेले है, अतः उनके कदम शिथिल हो जाते हैं।

(घ)

"दिन-जल्द-जल्दी-जल्दी ढलता है" कथन कवि ने समय के तेजी से बीत जाने का कर्म वर्णन किया है। कवि के अनुसार तेजी से संरक्षक अपने बच्चों के पास पहुँचने का प्रयत्न करते हैं, वही कवि के साथ कोई भी नहीं है। इसी प्रकार जीवन-रूपी नाव में भी सबको अलग-अलग ही घुमाना पड़ता है व सफ़्त दिन-प्रति-दिन ढल जाता है वह जिदंगी समाप्त हो जाती है। जल्दी-जल्दी में कवि ने पुनर्जात प्रकाश का प्रयोग

किया है।

2

6

उत्तर 9

(क)

- i) कवि ने सरल भाषा का प्रयोग किया है।
- ii) भाषा सधन है।
- iii) अल्पनिष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग किया है, अल्पनिष्ठ है।
- iv) प्रस्तुत पंक्तियों में देशज भाषा का भी प्रयोग किया गया है।
- v) उदाहरण - 'लोका देना'
- vi) माँ ने बच्चे की तुलना चाँद के टुकड़े से की है।
- vii) खिलखिलाते बच्चे की हँसी में 'अव्य विब' है।
- viii) प्रस्तुत ^{पंक्तियाँ} रुबाईयाँ से ली गयी हैं इसमें पहली, दूसरी व चौथी पंक्ति में तुलना तक बैठता है व ~~(ख)~~ तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है।

2

भाव सौंदर्य - प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने माँ का अपने बच्चे के प्रति स्नेह को व्यक्त किया है। माँ अपने

(ख)

चाँद के टुकड़े को आँगन में लिए खड़ी है, वह उसे झुला रही है, बीच-बीच में वह उसे हवा में उछाल देती है जिससे बच्चा बहुत खुशी से हँसने लगता लगता है।
अतः इसमें माँ का बच्चे के प्रति स्नेह को वर्णित किया है।

(ग)

- क) माँ का बच्चे के प्रति स्नेह का चित्रण है अतः स्वभाविक स्वभाविक अलंकार है।
ख) रह-रह में पुनरुक्ति प्रकाश है।
ग) बच्चे को चाँद के टुकड़े की संज्ञा दी गयी है।
घ) विवात्मक शब्द है।
ङ) माँ के लिए गोद-भरी शब्द का प्रयोग किया गया है।

6

10

(क) कुँवर नारायण के अनुसार जिस प्रकार बच्चे भेद-भाव से रहित रहते हैं। उनके अनुसार देश, जाति, धर्म, लिंग आदि में कोई अंतर नहीं रहता है। उनके लिए सभी घर समान होते हैं, उसी प्रकार कविता भी घर-घर में घुमती है व अपने विचार सभी को फैलाती है। कवि के अनुसार कविता भी सबको समान मानती है। वह हर किसी सामान रूप में शिक्षा देती है।

अतः इसीलिए कवि के अनुसार कविता की उड़ान असीमित होती है। वह बिना मुरझाए बढ़कती है तथा हर व्यक्ति को समान मानती है।

3

(ख)

(ग) संभवतः यह देखा गया है कि कवियों को समाज से कोई मतलब नहीं रहता, परंतु तुलसीदास जी के साथ ऐसा नहीं है। वह अपने समाज की आर्थिक विषमताओं की अच्छी समझ है। उनके अनुसार किसान के पास खेती नहीं है, भिखारी को कोई भीख नहीं देता, व्यापारी के पास व्यापार करने

के लिए रुपये नहीं हैं, अलग-अलग साधन के लोगों के पास अपनी जीविका को चलाने के लिए उपयुक्त साधन नहीं हैं, अतः वह सब जीविकाविहीन हो गये हैं। वही एक छंद में तुलसीदास जी ने कहा है कि पेट की आग समुद्र से भी बड़ी है अतः इसको शांत करने के लिए लोग ऊँचे-नीचे कर्म, धर्म-अधर्म व अपने बेटा-बेटी को बेच देते हैं, यह उल्लेख उदाहरण स्पष्ट करते हैं कि तुलसीदास जी को समाज की आर्थिक विषमताओं की अच्छी समझ थी।

3

11

(क) लेखक जैनेंद्र कुमार के अनुसार बाजार एक मायाजाल है, यह एक जादू की तरह है, 'बाजार में एक जादू है' का अर्थ है कि बाजार लोगों को अपने मायाजाल में फँसाता है, यह अपने रूप, रंग, आकार से लोगों का मन मोह लेता है। यह जादू तब काम करता है जब जब भरी व मन खाली होता है, जब भरी पर मन भरा न हो तब

भी यह जादू खूब असर करता है।

(ख) इस जादू की मर्यादा यह है कि मनुष्य अपने लोभ व इच्छा के आगे झुक जाता है, जब भरी हो और मन खाली हो तो यह जादू बहुत चलता है। अतः यह आवश्यक रहता है कि बाजार जाते वक़्त मन भरा रहना चाहिए, जिस प्रकार लू में पानी पीकर जाने से लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है, इसी प्रकार बाजार जाए तो मन भरा रहना चाहिए। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि मन शून्य हो जाए।

(ग) मन खाली होने का अर्थ है मन में विचार न होना, अर्थात् मनुष्य अपनी आवश्यकता की चीज़ न होते हुए भी खरीद लेगा, वह अनावश्यक चीज़ें खरीद लेता है, इसके परिणाम स्वरूप समय आने पर उसे पछतावा होता है, क्योंकि खाली मन से अनेक चीज़ें उसे आकर्षित करती हैं और वह उस गहरे जाल में फँस जाता है, और आखिरी में अपना सिर पीटता है।

(घ) जब मनुष्य अनावश्यक चीज़ों को खरीद कर सभी सभान को

अमरी मानने लग जाता है व आखिरी पध्दताता है
 तब जादू का असर दिखाई देता है।
 मन पर जादू का असर तब चढ़ता है जब मनुष्य
 अनावश्यक चीजों को खरीदता है। इससे वह मायाजाल में
 फँसता चला जाता है व स्वभाव से आलसी बन जाता
 है।

12. (ख) जीजी के अनुसार त्याग भावना से दिया गया ही दान
 फलीभूत होता है, वह इसे अंधविश्वास नहीं मानती थी,
 उनका मानना था कि भगवान भी यही चाहते हैं।
 दान का शास्त्रों में बहुत महत्व बताया गया है। उनके
 अनुसार अगर अमीर दो-चार रूपये दान दे तो वह
 दान नहीं कहलायेगा। दान वह होता है जिसकी चीज की
 हमारे पास कमी है व हमें उसकी जरूरत हो वह देना
 किसान भी जब 50-60 टन खेती करता है तो वह 5-6
 सेर अनाज फेंक देता है। इसी प्रकार पानी के दान
 देने से इंद्र देवता प्रसन्न होंगे व वर्षा करेंगे।
 परंतु लेखक इन्हें अंधविश्वास मानता है।

(ग) पहलवान की ढोलक मृतक गाँव के लिए संजीवीनी का कार्य करती थी। वह बीमार हुए लोगों की नसों में स्फूर्ति भर देती थी। मरते हुए लोगों को आँखे मूँदने में तकलीफ भी नहीं होती है। वह लोगों के अंदर उत्साह भर देती थी। लोगों के सामने कुश्ती का दृश्य आ जाता था जो उन्हें आत्मविश्वास से भर देता था। पूरे गाँव में यह संजीवीनी की तरह रात्रि की विभीषिका को शांत करने का कार्य करती थी।

3

(घ) चार्ली चैंप्लेन का जीवन बड़े कष्टों से बीता। उनकी माँ परित्यक्ता थी व दूसरे दर्जे की स्टेज अभिनेत्री थी। माँ की मृत्यु का उनका पालन-पोषण उनकी नानी ने किया। उनकी नानी खानाबदोश थी। उसका जीवन सामाजिक अपमानसाही, धूर्णित संज्ञा से गहरा था जिसने उन्हें धुमंतु चरित्र का बना दिया था। इसके बावजूद जीवन में अत्यंत संघर्ष झेले - जिसके कारण चार्ली ने अभीर होकर ही जीवन के मूलतत्त्व नहीं खोने दिये।

अतः जीवन को अत्याधिक विषमताओं से झेलने के बाद चाली ने कभी भी अहं की दावी नहीं होने दिया। उन्होंने खुद पर हँसने का प्रचलन बनाया।

(ड) नमक' कहानी की मूल संवेदना है कि देश मानचित्र पर लकीर खींचने से ही देश अलग नहीं होते, पाठ में सफिया, सिख बीबी, कस्टम अधिकारी, सुनीलदास गुप्ता आदि को देखकर यह पता चलता है, मानचित्र पर लकीर खींचने से मनुष्य की भावनाएँ नहीं नष्ट करी जा सकती हैं। सिख बीबी लाहौर को अपना वतन बताती है व वहाँ से लाहौरी नमक लाने की सौगात करती है। पकिस्तानी कस्टम अधिकारी अपना वतन दिल्ली बताते हैं व जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर सलाम करने को कहता है। भारतीय कस्टम अधिकारी सुनीलदास गुप्ता हिंदाका को अपना वतन बताते हैं। अतः इस इन सभी उदाहरणों से नमक पाठ की मूल संवेदना प्रकट होती है।

13

5
 भूषण का अपने पिताजी को सिल्वर-वेडिंग पर ऊनी ड्रेसिंग गाऊन देना यशोधर पंत जी के मन में अभाव पैदा करता है। उनका मानना है कि उनके बच्चे उन्हें यह नहीं कह रहे कि दूध में ला डूंगा। उनका मानना है कि भले बच्चे कितने बड़े क्यों न हो गए हो परंतु उनमें मौलिक संस्कारों की आज भी कमी कमी है। आधुनिकता की इस दौर पर वह अपने पिताजी को अफस का आश्वासन देने के बजाय गाऊन देता जो कि उन्हें फटा पैजामा पहन कर ना जाना पड़े। भूषण के द्वारा दिया गया गाऊन यशोधर जी के मन में अराजकता का भाव पैदा करती है। उनका मानना है कि शायद सारी दुनिया जो हुआ होगा ही में जीती है।

बुर्जुग पीड़ी • हमसे कुछ आप अपेक्षा करती है, वह चाहती है कि हम संकट की परिस्थितियों में उनकी सहायता करें। उनके कार्य को अपना कार्य समझे, उनकी देखभाल करें। उनके साथ रहें, वह चाहती है कि हम

पढ़-लिखकर उनकी मदद करें, अपने जीवन को सद्गता से जैसे परंतु आम की पीढ़ी ऐसा कुछ नहीं करती, उनके अंदर की मानवीय सवैलनाये नष्ट हो रही हैं,

भूषण के द्वारा पिताजी को दिया गया गाऊन यही मनोदशा दिखलाता है कि हमारे अंदर अभाव बढ़ बढ़ रहे हैं, व आपनों की मदद के लिए हम कोमचोरी कर रहे हैं,

यशोधर काबू अपने बच्चों से इतना चाहते थे कि वह भी उनका काम में हाथ बँटाए परंतु उनके बच्चों को ऐसा कुछ पसंद नहीं था।

आधुनिकता के दौर पर हम मानवीय मूल्य खोते जा रहे हैं अतः आवश्यकता है अपना व बड़ों का आदर करने की क्योंकि वह हमारे भला ही चाहते हैं।

10

.14

क) मेरे विचार से लेखक की पढ़ाई के प्रति दत्ता जी राव का रवैया सही नहीं है। लेखक के पिता का। दत्ता जी राव पढ़ाई का महत्त्व समझते थे व लेखक व उसकी माँ से बात करने के बाद उन्हें आश्वासन देती है कि लेखक पढ़ पायेगा। वही लेखक के पिता लेखक को पढ़ना व्यर्थ समझते हैं। लेखक के पिता के अनुसार लेखक को खेती में मन लगाना चाहिये। वह लेखक से सारा काम करवाना चाहते थे व खुद आराम करना चाहते थे किंतु लेखक को पढ़ना था। वह दत्ताजी राव से बात करने के बाद भी लेखक के सामने शर्त रखते हैं कि सुबह वह खेत का काम करके स्कूल जायेगा व फिर स्कूल से आकर खेत का कार्य करेगा और जरूरत पड़ने पर छुट्टी करेगा। इससे पता चलता है कि उनका रवैया सही नहीं है। दत्ता जी राव के मतानुसार पढ़ना आवश्यक है। वह लेखक के पिता को डाँटते हैं और उसे स्कूल भेजने को

कहते हैं। और यह भी कहते हैं कि तुझसे नहीं होगा तो मैं खुर्चा उठाऊंगा। वह लेखक को भी समझाते हैं कि उसको पढ़ाई मन लगाकर करनी होगी।

अतः वह लेखक को हर हालत में पढ़कर नाम कमाने के बारे में जान कराते हैं। अगर फलाजीराव न होते तो लेखक कभी पढ़ न पाता और उसके पिता उसे खेती में ही लगाए रखते।

अतः पढ़ाई-लिखाई के संबंध में फलाजीराव रवेया सही थे। उन्होंने लेखक की मदद की जो कि पढ़ सके। मेहनत की व वह सफल रहा।

(ख)

लेखक ओम शानवी ने जब सिंधु-घाटी सभ्यता के दो शहरों में यात्रा की तो उन्होंने पाया कि सिंधु सभ्यता साधन - संपन्न व इसमी क इसमें कृत्रिमता एवं आडंबर नहीं थे। पुरातल विद्वान वैज्ञानिकों की माने तो यहाँ के अजायबघर का समान आज भी शोभा बड़ा रहे है। जब वह यात्रा के दौरान एक अजायबघर में गए थे तो उन्होंने देखा कि यहाँ अजार तो है परंतु दायियार नहीं है। जैसे हर राजा के पास दायियार की बड़ी खेप होती थी परंतु यहाँ दायियार नहीं है। इसके मतानुसार सिंधु सभ्यता राजतंत्र व धर्मतंत्र के नवल पर अनुशासित सभ्यता थी। लोग मूलतः पशुपालन व खेती करते थे। यहाँ से मिले बर्तन, मृदु भाड़े आदि को देखकर पता लगाया जा सकता की यहाँ के लोगों को कला में खास रुचि थी। यहाँ लोकतंत्र राजसत्ता के बल पर नहीं थी। जैसे राजा के पास दायियारों की बड़ी खेप होती है सिंधु

घाटी सभ्यता में ऐसा कुछ भी नहीं है, यहाँ छोटी नावें
 मिली हैं व मिस्त्र में बड़ी नावों का प्रचलन है,
 यह का सामान चित्र, बर्तन आदि इसकी कहानियाँ
 बताते हैं, मंदिर, महल आदि सब थे परंतु वह समय
 के साथ हो गए। यहाँ पानी निकासी की
 बहुत अच्छी व्यवस्था थी,
 यहाँ एक बैलगाड़ी भी मिली है जो उस समय के
 महानतम आविष्कारों में से एक है,
 यहाँ से गिला सूती कपड़ा हजारों साल पहले की
 कहानी कहता है। सूइयाँ व छतर-तरछ के औजार
 यहाँ पाये गए हैं, परंतु दथिमर का नामोनिश
 नहीं है, यहाँ एक महाकुंड भी है,
 अतः यह सभी प्रमाण बताते हैं कि वहाँ के लोग
 अनुशासित थे और यह अनुशासन सत्ता बल के
 द्वारा नहीं था।

अतः सिंधु घाटी सभ्यता साधन संपन्न थी, पर इस
 सभ्यता का आडंबर नहीं था।

खण्ड-क

15

1.

(क) भाषा व्यवसायी का अर्थ है भाषा को व्यवसाय बनाना। आजकल के राजनीतिक भाषा को व्यवसाय (धंधा) बना चुके हैं, वह भाषा के नाम गम पर व्यवसाय कर रहे हैं, उनकी पोल तक खुलती है जब भाषा के विरोध होना शुरू हो जाता है।

(ख) संघ एक कार्य प्रणाली का अभिन्न अंग है, यह सुनिश्चित करती है देश के कार्य प्रणाली अच्छे से चलें। संघ का यह कर्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करें, जिससे वह भारत की समाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति करें। व सभी संबंधित संविधान में लिखे अनुच्छेद अनुच्छेद 351 के अंतर्गत कर्तव्यों का पालन करें।

(ग) हिंदी हमारी राजभाषा है। हमें इसका प्रयोग अधिक से अधिक मात्रा में करना चाहिए क्योंकि यह अपना वर्चस्व खोते जा रही है। जिस भाषा से हम जाने जाते हैं उस भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है।

(घ) भाषा विविधताओं का देश है। अन्य भाषाओं से लेखक का तात्पर्य विभिन्न राज्यों बोली जाने वाली भाषाओं से है। यहाँ उनका उल्लेख अकी शैली, रूप को बढ़ावा देने को हुआ है।

(ङ) अंग्रेजी भाषा की मानसिकता का तात्पर्य उसके बढ़ते प्रचलन से है लोग हिंदी को भूलते जा रहे हैं। इससे हमारी अपनी भाषा की अस्मिता व अविष्य संकट में है।

जब (च) हमारी मुवा पीढ़ी अंग्रेजी भाषा की ओर आकर्षित हो रही है व हमारी भाषा की अपनी अस्मिता व अविष्य संकट में है। शिक्षा, व्यापार,

व्यवहार, व आदि किसी भी प्रक्रिया में हमारी भाषा को वर्चस्व नहीं मिल पा रहा है, 2

(घ) इसका अर्थ भाषा को बढ़ावा देने से है, उसकी समृद्धि से है। यह तभी संभव हो सकता है जब हम हर क्षेत्र में हिंदी व प्रादेशिक भाषाओं का उपयोग करें। जिससे उसकी आस्मिता बनी रहे, 2

(ज) (क) हिंदी व प्रादेशिक भाषाओं का अविष्य
(ख) अवसामी राजभाषा मातृभाषा का व्यवसाय।

2:

(क) जब वीर क्षमा मांगते हैं तो यह कलंक बन जाती है और जब क्षमता क्षमा जब शूरवीरों की भृंगार है।

(ख) प्रवेशोद्य अर्थात् किसी के खिलाफ बनना।

(ख) प्रतिशोध से शौर्य की शीखारें दीप्त होती हैं, वह हीन नरों में महापाप, यह तब आवरथक जब मनुष्य को अपने अपमान के खिलाफ आवाज उठानी है।

(ग) सदिष्णुता को विमूषण और अभिज्ञाप इसलिए कहा गया है क्योंकि यह शूर व व दार दोनों को अभिव्यक्त करती। दाकरी हुई जाति के लिए सदिष्णुता अभिज्ञाप है।

(घ) लोभ का युद्ध धर्म को विरुद्ध माना गया है, यह क्षात्र धर्म के विरुद्ध है।

(ङ) इसका अर्थ है की शूर पौरुष जब मनुष्य में जाग्रत होता है तो वह धर्मयुद्ध कहलाता है। इससे मनुष्य के अंदर का प्रतिशोध प्रबुद्ध हो जाता है।

खण्ड - खप्र० 6

- (क) इस पत्रकारिता में फेंशन, अमीरों की पार्टियाँ ब, अमीर लोगों की आम जिंदगियों, ~~बेखबर~~ और फिल्मी मपकाप गपशप जैसी खबरे प्रकाशित होती हैं, यह अकसर पेज-थ्री में प्रकाशित होती है।
- (ख) समाचार पत्र में निश्चित मानक पर काम करने वाले रिपोटर।
- (ग) इसमें खबरों की गहन शोध, दानवीन, विश्लेषण किया जाता है व उन्हें प्रकाशित किया जाता है।
- (घ) संवाददाताओं का काम में विभाजन उनकी रुचि के अनुसार बंट कदलाती है। उदाहरण - खेल, व्यापार आदि

- (5) ① निरूपणों के लिए यह उपयोगी है,
 ② इसमें वाक्य छोटे व सरले होते हैं,
 ③ इन्हें इसे आसानी से समझा जा सकता है।

3.
 (निबंध)

विकास के लिए शिक्षा आवश्यक

भारत विविधताओं में एकता का देश है। आज हमारा देश हर क्षेत्र में प्रगति कर रहा है व आसमाव की ऊचाइयों को छू रहा है। परंतु विकास के लिए सबसे उपयोगी शिक्षा है। कहा भी जाता है कि "शिक्षा का बिना व्यक्ति मृतक समान है।"

आधुनिकता की बात करें तो अले ही हमारा देश आगे है परंतु आंकड़े बताते हैं कि हमारे देश में केवल 74.04% (प्रतिशत) लोग शिक्षित व जिनमें महिलाओं की संख्या 65.46% (प्रतिशत) है। हम अपने आप को आधुनिक बताते परंतु आज भी हमारे देश में कई राज्य विकास के दर में हरीछे हैं कारण हैं आशिक्षित होना। हमारी युवा पीढ़ी

बेरोजगार हैं।
 देश के कई राज्य बिहार, ओडिसा, मध्य प्रदेश इसीलिए
 पीछे हैं क्योंकि यहाँ केवल 60-65% (प्रतिशत) लोग
 ही शिक्षित हैं। भारत एक उरुड्ड वड़ा देश जो विभिन्न
 प्रकार की वेश-भूषाओं से प्रसिद्ध है। परंतु इन आंकड़ों
 को देखकर हैरानी है।

देश का विकास विमान, खेल, राजनीति से ही नहीं होता
 इसमें जरूरत है ज्यादा से ज्यादा लोगों की शिक्षित
 करने की। करेल आज भारत में विकास के फौंड
 सबसे आगे है क्योंकि यहाँ वहाँ 93.91% (प्रतिशत) लोग
 शिक्षित हैं। अतः शिक्षा के बिना मनुष्या निरी पशु
 समान है।

देश अगर शिक्षित होगा तभी हमारा विकास होगा।
 प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा संचालित 'बेटी बचाओ बेटी
 बचाओ' लड़कियों को अवसर देने की एक सुलभ
 मुहीम है।

आखिरकार एक लड़की पढ़ती है तो वह दो घरों का
 विकास करती है। वर्तमान में कई ऐसे आश्रयान
 चल रहे हैं परंतु जरूरत है उन्हें मूलतः

व्यवहार में लाने की।

अतः अगर देश को उचाइयों तक पहुँचाना है तो आवश्यक है कि देश के नागरिक शिक्षित हों।

5

4 (आलेख)

गाँव से मजदूरों का पलायन.

गाँव से अक्सर भारत में कड़ बढ़ती आबादी के लोग शहर आते हैं जो कि वह अपना जीवनयापन अच्छे कर सकें। भारत में करीब 68% प्रतिशत लोग गाँव से शहर आते हैं। शहर कई साधनों भरा पूरा रहता है। इन साधनों में पढ़ाई, रोजगार प्राप्ति के अक्सर प्रमुख हैं। मजदूर गाँवों से शहर में अपनी ~~जीविकोपार्जन~~ जीवनयापन के लिए आते हैं। शहर के चकाचौंध उन्हें प्रभावित करती है।

कई बार नियमित रूप से अवसर न मिलने की वजह से इन लोगों को अनेक यातनाओं को सहना पड़ता है। मूलतः यह लोग झुग्गी-झोपड़ी में रहते हैं व काम अपने इच्छानुसार नहीं कर पाते हैं, उनकी झोपड़ियाँ नालों के पास स्थित होती हैं जिससे इन्हें अनेक प्रकार की बीमारियों को झेलना पड़ता, यह लोग अनपढ़ इसलिए इनका शोषण भी किया जाता है।

अक्सर कहा जाता है कि शहर की गंदगी बढ़िया होती परंतु इन लोगों अनेक प्रकार के कष्टों को झेलना पड़ता है। गाँवों से मजदूरों का पलायन बढ़ता जा रहा है जो सत्र सम्भव व शहरों की जनसंख्या बढ़ा रहा है। मजदूरों का पलायन उनको कष्ट से भरी जिंदगी देती है। हर साल भारत का बहुत बड़ा वर्ग पलायन करता है और इन समस्याओं को झेलता है।

अतः महानगरों में पलायन गाँवों के मजदूरों द्वारा हर स्थिति लोगों को आभाजाल में फँसा रहा है।

संभवतः जरूरत है लोगों के लिए ज्यादा से ज्यादा आवास निर्माण करने की जो सस्ता भी रहे व लोगों की जरूरतें पूरी कर सके।

5

महानगरों में आवास की समस्या

देश के 4 प्रमुख महानगर दिल्ली, कलकत्ता, चेन्नई, मुंबई माने जाते हैं, परंतु यहाँ आवास की समस्या प्रमुख है। लोगों को रहने के लिए आवास नहीं मिलते। इसका मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या है। विभिन्न छोटे शहरों से महानगरों में अपनी जीवनिक चलाने के लिए आते हैं जिससे उन्हें रोजगार मिले परंतु उन्हें यहाँ आवास ही नहीं मिलते।

ऐसा कहा जाता है कि भारत के 31.6% प्रतिशत लोग शहरों में रहते हैं। आबादी में से मुख्यतः महानगरों में रहने वालों की समस्या बहुत अधिक है।

इस कारण मुख्यतः लोग झुग्गी - झोपड़ी में रहना शुरू कर देते हैं। मुंबई का "द्वाराद्वी" इसी का उदाहरण है वहाँ 1450 लोगों के लिए एक बौचालय था समस्या बढ़ती जा रही है, लोगों को आवास न मिलने के कारण कई लोग सड़क में रहते हैं।

महानगरों में आवास की समस्या हाल ही कुछ सालों में बढ़ गई है, आवश्यकता है इसे सुलझाने की क्योंकि भारत की अधिकतर लोग इन्हीं में रहा करते हैं।

भले ही यह अनेक प्रकार के साधनों से निर्मित है परंतु लोगों को आवास न मिलना सम्भवतः सबसे बड़ी मुख्य समस्या।

इसका निवारण है। आवश्यक क्योंकि कई लड़कियों के लिए इन महानगरों में रहना मुश्किल हो गया है।

परिक्षा भवन
हरिद्वार

02.04.2018

प्रति

निदेशक महोदय,
दूरदर्शन केन्द्र
पहरापूर

विषय - नवीन साहित्यिक रचनाओं पर कार्यक्रम प्रसारित करना।

महोदय,

सविनय निवेदन इस प्रकार है कि मैं आपके दूरदर्शन केन्द्र के माध्यम से नवीन साहित्यिक रचनाओं पर कार्यक्रम प्रसारित करने का

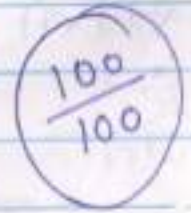
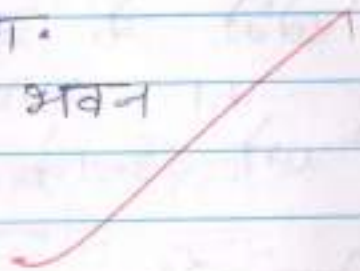
आग्रह करना चाहती हैं।
 भावी पीढ़ी युवा पीढ़ी है, दूरदर्शन कोई भी संदेश
 देने का सबसे उचित माध्यम है, अगर आपके
 दूरदर्शन के माध्यम से नवीन समष्टिके साहित्यिक
 रचनाओं का प्रकाश किया जाए तो - उनके जीवन में
 इसका बहुत अच्छा फल मिलेगा।
 बच्चे उन्हें देखकर सीखेंगे के अपने आप को
 उनके अनुसार जीवन का थापन करेंगे।
 वह मानवीय मूल्य सीखेंगे जो उनके जीवन में
 सदा बने रहेंगे।
 अतः आपका दूरदर्शन केंद्र अगर आज के
 युवाओं को प्रोत्साहित करने का प्रमुख माध्यम
 हो सकता है तो इससे देश को लाभ होगा।
 इन रचनाओं का कार्यक्रम देखकर युवा खुद
 लिखने के लिए। उनके सोचने को
 बढ़ावा देगा।
 युवा आगे बढ़ेंगे तो हमें सबसे
 ज्यादा खुशी होगी।
 अतः आशा करती हूँ कि आप मेरे विचारों

के बारे में विचार करेंगे व अपने केन्द्र में नवीन साहित्यिक रचनाओं के कार्यक्रम प्रकाशित करेंगे, आपकी अति कृपा होगी,

सद्व्यवस्था
भवदीया,
क. ख. ग.

2018

परीक्षा भवन
हरिद्वार



Business
2020301